एक अल्लाह वाले की कबर में कुरान ऐ पाक की तिलावत

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी (दब)

हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से खुलासा लिप्यान्तरण किया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

एक अल्लाह वाले थे अल्लाह ताला ने उनको कश्फे कुबूर आता फ़रमाया अल्लाह के बाज़ बन्दे ऐसे होते हे के कबर में मुर्दो पर क्या हालत गुजरते हे अल्लाह ताला उनपर खोल देते हे उसको कैफे कुबूर कहते हे.

एक कबर के पास से उनका गुजर हुवा और उनको महसूस हुवा के ये साहिबे कबर कुरान पाक की तिलावत कर रहा हे इसी हालत में उन्होंने कबर वाले से पूछा के हमने तो सुना हे के आदमी का जब इन्तिकाल हो जाता हे तो उसके आमाल का सिलसिला ख़तम हो जाता हे और हम तो देख रहे हे के आप कबर के अंदर कुरान पाक की तिलावत कर रहे हे.

तो उनके जवाब में, साहिबे कबर ने कहा के बात दरअसल ये हे के जब मेरा इन्तिकाल हुवा और मुझे दफ़न किया गया

जैसे के हदीस में आता हे के आदमी को दफ़न करके जब लोग चले जाते हे तो अल्लाह ताला की तरफ से दो फ़रिश्ते आते हे और सवाल करते हे के तुम्हारा रब कौन हे तुम्हारा दिन क्या हे और रसूलुल्लाहﷺ के मुताल्लिक पूछते हे के उनके बारे में तुम्हारा क्या अक़ीदा हे तुम क्या कहते हो जब उसने उनके सरे जवाबात दे दिए तो गोया इम्तिहान में कामयाब हो गया,

तो अल्लाह ताला की तरफ से मुझे बतलाया गया के तुम कामयाब हो लेकिन चूंकि ये एक बरज़ख़ का दौर हे जो तुम्हे नहीं गुजरना हे जब तक के क़ियामत काइम न हो अब यहाँ तुम्हारे इस कायम के दौरान अपने लिए अगर कोई मशगुली तजवीज करना चाहो तो मेरी तरफ से उसकी इज़ाज़त हे.

तो मेने कहा के मुझे दुनिया के अंदर करने पाक की तिलावत से बारे सागफ था और हमेशा उसी को पसंद करता था तो यहाँ पर भी मुझे करने पाक पढ़ने की इज़ाज़त दी जाये चुनांचे मुझे उसकी इज़ाज़त दे दी गयी, और जब से दफ़न हुवा हु तब

से इस वक्त तक ७० हज़ार कुरान ख़तम कर चूका हु,

फिर आगे एक बात कही के अगर आप अपना एक सुब्हानल्लाह मुझे देदे तो में ये ७० हज़ार कुरान आपको देने के लिए तैयार हु, उन्होंने पूछा के बात क्या हे, तो जवाब दिया के बात दर असल ये हे के मेने ७० हज़ार कुरान पढ़े हे न वो सब टाइम-पास हे उसके उपर मुझे कोई सवाब नहीं मिलता ये सवाब तो उस वक्त तक हे जब तक हम इस ज़मीन के उपर चल रहे हे और मौत नहीं आयी हे उस वक्त तक जो अमल करेंगे उन्ही का सवाब मिलेगा ये जो कबर में, मेने इतने कुरान ख़तम किये उस पर मेरे नामा ए आमाल में एक भी नेकी नहीं बढ़ी हे, वो तो वही हे जहा मेरी मौत के वक्त था और तुम्हारा हर सुब्हानल्लाह तुम्हारी नेकियों में इज़ाफ़े का बाइस हे.

करले जो करना हे आखिर मौत हे

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदी) बारे जलीलुल कदर सहाबी हे एक मरतबा जा रहे थे के एक कबर के ऊपर नज़र

पर गयी तो अपनी सवारी से उतरे और दो रकत नमाज़ की निय्यत बांध ली नमाज़ से फारिग हुवे तो लोग समझे के शायद कबर वाला आप का कोई दोस्त होगा अज़ीज़ होगा जिसके इसाले सवाब के लिए ये नमाज़ पढ़ी होगी पूछा क्या बात हे तो आपने जवाब दिया के जब मेरी नज़र उस कबर पर पारी तो मुझे रसूलुल्लाहﷺ का ये इरसाद याद आ गया के, आदमी का जब इन्तेकाल हो जाये तो कबर में चला जायेगा तो वह जाकर तमन्ना करेगा के कास मुझे दो रकत पढ़ने का मौका मिलता तो मुझे ये कबर देख कर रसूलुल्लाहﷺ का ये इरसाद याद आ गया तो मेने सोचा के अभी तो में ज़िंदा हु मेरे पास मौका हे तो मेने उतर कर दो रकत नमाज़ पढ़ली.